N.E.W. SEMINARY अध्ययन मार्गदर्शिका

नहूम और हबक्कूक: परमेश्वर की दया और न्याय

पास्टर हून किम, 20 अक्टूबर 2026, नहूम 1:1

N.E.W. Church के पास्टर हून किम की शिक्षा। AI की सहायता से अंग्रेज़ी से अनुवाद किया गया। पूरी जाँच से पहले 11 नवंबर 2026 को साझा किया गया।

सुनने, डाउनलोड करने और साझा करने के लिए निःशुल्क: newexodusseminary.org/hi/2026-10-20-new-nahum-1-nahum-and-habakkuk-gods-mercy-and/

अध्ययन मार्गदर्शिका

अध्ययन मार्गदर्शिका: कैटलॉग की बुनियादी बातें: नहूम और हबक्कूक

मूल सत्य

वह संप्रभु परमेश्वर जो पश्चाताप करने वालों पर निरंतर दया करता है, वह घमंडी अत्याचारियों पर वाचा का धर्मी प्रतिशोध भी लेता है, और अपने सताए हुए बचे हुए लोगों को बुलाता है कि वे उसमें शरण पाएँ और बदलते वैश्विक दौर के बीच भविष्यद्वाणी के विश्वास से जीवन बिताएँ।

मुख्य पद

“यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है, और अपने शरणागतों की सुधि रखता है।”
नहूम 1:7 (IRV)

पृष्ठभूमि की बातें

1. **भू-राजनीतिक उथल-पुथल:** सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व (600 ईसा पूर्व के दशक) के दौरान, प्राचीन निकट पूर्व ने महाशक्तियों के भारी फेरबदल का अनुभव किया। नया-अश्शूरी साम्राज्य, जिसने 722 ईसा पूर्व में उत्तरी इस्राएल पर विजय प्राप्त की थी और 701 ईसा पूर्व में यरूशलेम की घेराबंदी की थी, अशूरबानिपाल के शासनकाल के बाद अपरिवर्तनीय पतन में प्रवेश कर गया। बाबुल, मादी और एलाम की संयुक्त सेनाओं ने नीनवे की घेराबंदी की और 612 ईसा पूर्व में उस नगर को नष्ट कर दिया, जिससे नहूम की भविष्यद्वाणी पूरी हुई।
2. **वाचा की जलन (*Qanna*):** नहूम 1:2 में, परमेश्वर का क्रोध और बदला स्पष्ट रूप से उसकी वाचा की पहचान से जुड़ा हुआ है। शास्त्र के अनुसार, परमेश्वर अपनी वाचा के लोगों के साथ एक विश्वासयोग्य पति के रूप में संबंध रखता है। जब विदेशी साम्राज्य उसके लोगों का क्रूरता से शोषण करते हैं, तो ईश्वरीय प्रतिशोध अपनी दुल्हन की रक्षा के लिए हस्तक्षेप करने वाले एक पति की पवित्र और प्रेमपूर्ण प्रतिक्रिया होती है।
3. **घोषणात्मक सुसमाचार (*Euangelion*):** नहूम 1:15 "शुभसमाचार सुनानेवाले के पाँवों" की घोषणा करता है। प्राचीन निकट पूर्व और ग्रीको-रोमन काल में, *euangelion* का अर्थ किसी सैन्य विजय, अत्याचारी के पतन, या किसी नए शासक के राज्याभिषेक की आधिकारिक शाही घोषणा होता था। सुसमाचार के लेखकों ने बाद में इस

शब्द को यीशु मसीह को सच्चे ब्रह्मांडीय राजा के रूप में घोषित करने के लिए अपनाया, जिसने बुराई को निर्णायक रूप से पराजित किया है।

4. **भविष्यद्वाणी का विलाप और प्रकाशन:** हबक्कूक यह स्पष्ट करता है कि सच्चे बाइबलीय विश्वास में निष्कपट विलाप भी शामिल है। भविष्यद्वक्ता यहूदा की आंतरिक हिंसा और न्यायदण्ड के साधन के रूप में दुष्ट बाबुल के उपयोग की नैतिक समस्या के संबंध में परमेश्वर से प्रश्न करता है। परमेश्वर यह प्रकट करते हुए उत्तर देता है कि सांसारिक घमंड अपने विनाश को स्वयं लाता है, परंतु "धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा" (हबक्कूक 2:4)।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. **वचन को समझना:** परमेश्वर को अपनी दुल्हन की रक्षा करने वाले एक विश्वासयोग्य पति के रूप में समझना, नहूम 1:2 में ईश्वरीय प्रतिशोध की भयानक भाषा के प्रति हमारे दृष्टिकोण को कैसे बदल देता है?
2. **विषयों की खोज करना:** योना (योना 4:11) और नहूम (नहूम 3:19) के अंत की तुलना करें। ये दोनों पुस्तकें मिलकर विरोधाभास के बजाय परमेश्वर के पवित्र चरित्र के सिद्ध संतुलन को कैसे प्रदर्शित करती हैं?
3. **शास्त्रवचनों को जोड़ना:** प्रकाशितवाक्य 6:9–11 और प्रकाशितवाक्य 8:3–5 के अनुसार, पृथ्वी पर पीड़ित विश्वासियों की प्रार्थनाएँ इतिहास में न्याय के ईश्वरीय क्रियान्वयन में कैसे भाग लेती हैं?
4. **भविष्यद्वाणी की कल्पना:** नहूम नीनवे के पतन का वर्णन करने के लिए सजीव संवेदी विवरणों (लाल ढालें, चाबुकों की फटकार, दौड़ते घोड़े, उजड़ी हुई सिंहों की मांद) का उपयोग करता है। यह "भविष्यद्वाणी की कल्पना" विकसित करना आज सांसारिक भ्रष्टाचार की प्रत्यक्ष ताकत से परे देखने में हमारी कैसे मदद करता है?
5. **व्यक्तिगत अनुप्रयोग:** हबक्कूक 1 में, जब ईश्वरीय कार्य मानवीय तर्क के विपरीत प्रतीत होते हैं, तो भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के सामने स्पष्ट और निष्कपट प्रश्न लाता है। आपके समुदाय या राष्ट्र की ऐसी कौन सी कठिन परिस्थितियाँ हैं जिन्हें आपको भविष्यद्वाणी की प्रार्थना में सच्चाई से परमेश्वर के सम्मुख लाने और उसकी शरण पर भरोसा रखने का निर्णय लेने की आवश्यकता है?

फ़ोन के लिए सारांश (WhatsApp)

वह संप्रभु परमेश्वर जिसने योना के समय नीनवे पर निरंतर दया दिखाई थी, उसने नहूम के समय जब वे पुनः क्रूरता की ओर लौट गए, तो वाचा का धर्मी न्याय लागू किया। सच्चा विश्वास व्यक्तिगत बदला नहीं लेता, बल्कि साहसी प्रार्थनाएँ करता है जो स्वर्ग के सिंहासन को हिला देती हैं, और बदलते वैश्विक दौर के दौरान परमेश्वर में विश्राम पाता है। “यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है, और अपने शरणागतों की सुधि रखता है।” (नहूम 1:7 · IRV)।

शिक्षा की रूपरेखा

शिक्षण रूपरेखा: कैटलॉग की बुनियादी बातें: नहूम और हबक्कूक

मुख्य अंश: नहूम 1:1–15; हबक्कूक 1:1–13
मुख्य विचार: वह संप्रभु परमेश्वर जो पश्चाताप करने वालों पर निरंतर दया दिखाता है, वह दुष्ट अत्याचारियों पर वाचा का धर्मी प्रतिशोध भी लेता है, और अपने विश्वासयोग्य बचे हुए लोगों को बुलाता है कि वे बदलते वैश्विक दौर के बीच उसके न्याय पर भरोसा रखें और भविष्यद्वाणी के विश्वास से जीवन बिताएँ।

पहला चरण: भू-राजनीतिक बदलाव और वाचा का पति

- **मुख्य शास्त्रवचन:** नहूम 1:2; यशायाह 37
- **शिक्षण बिंदु:** सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व के भविष्यद्वक्ताओं ने विशाल भू-राजनीतिक बदलावों के दौरान सेवा की, जब क्रूर नया-अश्शूरी साम्राज्य (Neo-Assyrian Empire) पतन की ओर बढ़ने लगा था। नहूम यह प्रकट करता है कि परमेश्वर का भयानक क्रोध वैवाहिक वाचा की जलन में निहित है: परमेश्वर एक विश्वासयोग्य पति के रूप में खड़ा होता है जो एक हिंसक शिकारी के विरुद्ध अपनी सताई हुई दुल्हन की रक्षा करता है।
- **मुख्य अंतर्दृष्टि:** ईश्वरीय प्रतिशोध कोई भावनात्मक आत्म-नियंत्रण खोना नहीं है; यह धर्मी न्याय है जो परमेश्वर के पीड़ित लोगों को सांत्वना और निर्दोषता का प्रमाण प्रदान करता है।
- **दृश्य:** दृश्य 101 (छोटे भविष्यद्वक्ताओं के विषय), दृश्य 103 (अश्शूर के निर्वासन का नक्शा), दृश्य 104 (नीनवे नगर), दृश्य 105 (नहूम 1:2 शास्त्रवचन)।

दूसरा चरण: इतिहास में प्रार्थना की आत्मिक प्रक्रिया

- **मुख्य शास्त्रवचन:** नहूम 1:7; प्रकाशितवाक्य 6:9–11; प्रकाशितवाक्य 8:3–5
- **शिक्षण बिंदु:** जब विश्वासियों को उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, तो उन्हें व्यक्तिगत बदला न लेने, बल्कि बदला परमेश्वर पर छोड़ देने की आज्ञा दी गई है। जैसा कि प्रकाशितवाक्य में पाँचवीं और सातवीं मुहर के अंतर्गत देखा गया है, परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाएँ धूप की तरह स्वर्गीय सिंहासन के कमरे में ऊपर उठती हैं और पृथ्वी पर फेंकी गई आग के द्वारा उनका उत्तर दिया जाता है।
- **मुख्य अंतर्दृष्टि:** वास्तविक समय में, एक स्थानीय कलीसिया की पुकार भरी प्रार्थनाएँ न्याय लागू करने और मानव इतिहास को बदलने के लिए परमेश्वर के संप्रभु हाथ को सक्रिय करती हैं।
- **दृश्य:** दृश्य 1 (संकट के समय में शरणस्थान), दृश्य 2 (प्रार्थनाएँ और ईश्वरीय न्यायदण्ड)।

तीसरा चरण: एक सदी का अंतर: निरंतर दया और निश्चित न्याय

- **मुख्य शास्त्रवचन:** योना 4:11; नहूम 3:19
- **शिक्षण बिंदु:** योना (लगभग 760 ईसा पूर्व) और नहूम (लगभग 660 ईसा पूर्व) नीनवे के प्रति परमेश्वर के अपरिवर्तनीय पवित्र चरित्र के दो पूरक पहलुओं को प्रस्तुत करते हैं। जब नीनवे ने पश्चाताप किया, तो परमेश्वर ने निरंतर दया दिखाई; जब नीनवे एक सदी बाद फिर से लगातार क्रूरता की ओर लौट गया, तो परमेश्वर ने अटल न्याय लागू किया।

- **मुख्य अंतर्दृष्टि:** परमेश्वर का चरित्र एक समान है, मनमौजी नहीं। योना की पुस्तक अनुग्रह के एक प्रश्न के साथ समाप्त होती है; नहूम की पुस्तक न्याय के एक प्रश्न के साथ समाप्त होती है।
- **दृश्य:** दृश्य 109 (योना और नहूम की तुलना), दृश्य 3 (अनुग्रह और न्याय के प्रश्न)।

चौथा चरण: काव्यात्मक भविष्यद्वाणी और पतन का सुसमाचार

- **मुख्य शास्त्रवचन:** नहूम 1:15; 2:2–3; 3:2–3
- **शिक्षण बिंदु:** नहूम नीनवे के पतन की घोषणा *euangelion* के रूप में करता है, जो साम्राज्यवादी बंधन से मुक्ति और स्थायी शांति का राजाज्ञा-संबंधी सुसमाचार है। नहूम भविष्यद्वाणी की कल्पना को जागृत करने और परमेश्वर के आसन्न न्यायदण्ड की निश्चितता की पुष्टि करने के लिए सजीव दृश्य रंगों (लाल वस्त्र पहने योद्धा, चमकते हुए रथ) और ध्वनियों (चाबुकों की फटकार, पहियों की खड़खड़ाहट) का उपयोग करता है।
- **मुख्य अंतर्दृष्टि:** सांसारिक शक्तियाँ जो अजेय सिंहों की मांद के समान घमंड करती हैं, वे परमेश्वर के संप्रभु आदेश से पूरी तरह उलट दी जाएँगी।
- **दृश्य:** दृश्य 112 (सातवीं शताब्दी के भविष्यद्वक्ता), दृश्य 113 (नहूम और छोटे भविष्यद्वक्ता), दृश्य 4 (शांति का सुसमाचार), दृश्य 115 (भविष्यद्वाणी के चित्र)।

पाँचवाँ चरण: हबक्कूक का भविष्यद्वाणी-संबंधी संवाद

- **मुख्य शास्त्रवचन:** हबक्कूक 1:1–4, 13; हबक्कूक 2:4
- **शिक्षण बिंदु:** जैसे ही अश्शूर का स्थान लेने के लिए बाबुली साम्राज्य का उदय हुआ, हबक्कूक ने सच्चाई से भरी भविष्यद्वाणी की प्रार्थना की, जिसमें उसने यहूदा में आंतरिक अन्याय और ताड़ना के साधन के रूप में दुष्ट बाबुल के हैरान कर देने वाले उपयोग के बारे में कठिन प्रश्न पूछे।
- **मुख्य अंतर्दृष्टि:** भविष्यद्वाणी की प्रार्थना मानवीय उलझन को छिपाती नहीं है; यह परमेश्वर के सामने सच्चे प्रश्न लाती है और संप्रभु प्रकाशन प्राप्त करती है। ढहते हुए साम्राज्यों के बीच, धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा।
- **दृश्य:** दृश्य 119 (सातवीं शताब्दी की समय-रेखा), दृश्य 122 (हबक्कूक की शिकायत)।

समापन प्रतिक्रिया

कलीसिया का आह्वान करें कि वह व्यक्तिगत कड़वाहट को त्याग दे, धर्मी न्याय के लिए मध्यस्थता के द्वारा आत्मिक युद्ध में शामिल हो, और अपने विश्वास को उस अपरिवर्तनीय परमेश्वर में स्थिर रखे जो उन सभी के लिए शरणस्थान बना रहता है जो उस पर भरोसा रखते हैं।

पवित्रशास्त्र के उद्धरण: इंडियन रिवाइज्ड वर्ज़न (IRV) हिंदी, कॉपीराइट © 2017, 2018, 2019 ब्रिज कनेक्टिविटी सॉल्यूशंस, क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरअलाइक 4.0 लाइसेंस (CC BY-SA 4.0) के अंतर्गत, eBible.org से। Scripture quotations: Indian Revised Version (IRV) Hindi, Copyright © 2017, 2018, 2019 by Bridge Connectivity Solutions, used under the Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 license (CC BY-SA 4.0), from eBible.org.